International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 2; Issue11; November 2015; Page No. 689-692

समकालीन विमर्श में उत्तर आधुनिकतावाद और भूमंडलीकरण

विश्वेश कुमार मिश्र

जे .आर .ऍफ़ शोधछात्र हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

उत्तर आधुनिकतावाद और भूमंडलीकरण आज के समय के प्रमुख विमर्श हैं और अन्य विमर्श संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, दलित- विमर्श, स्त्री- विमर्श, बाजारवाद, पूंजीवाद, उपभोक्तावाद आदि जो आज स्वतन्त्र विमर्श का रूप ले चुके हैं, भी इन्हीं विमर्शों से जुड़े हुए हैं| भूमंडलीकरण रूपी तंत्र या व्यवस्था को बनाए रखने के लिए जिस बौद्धिक और मानसिक खुराक की जरुरत है उसे उत्तर आधुनिकतावाद द्वारा पूरा किया जाता है| यह इन दोनों में अद्भुत साम्य है| इसे अप्रत्याशित भी नहीं कहा जा सकता है| प्रभाकर श्रोत्रिय का यह कथन कि — "रचना में से लेखक का प्रयोजनमूलक, भावमूलक तथा साधनामूलक अस्तित्व को समाप्त करना,भूमंडलीकरण द्वारा कर्ता को समाप्त कर देने की चेष्टा का बौद्धिक संस्करण है|"१ (द्रष्टव्य: साहित्य की इतिहास दृष्टि, प्रभाकर श्रोत्रिय, पृष्ठ ८३) कर्ता को गौड़ बना देने की गुप्त संधि इन दोनों के बीच है| मुक्त बाजार के नाम पर भूमंडलीकरण के व्यवसायी ऐसे विकासशील देशों में पहुचते हैं, जहाँ उन्हें मुफ्त की जमीन,सस्ता कच्चा माल तथा सस्ते श्रमिक तो प्राप्त हों किन्तु वे स्वामित्व से वंचित रहें अर्थात कर्ता का अधिकार उनके पास सुरक्षित रहे | यही भूमंडलीकरण की मुक्त अर्थव्यवस्था है, जिसे बहुराष्ट्रीय कंपनियां चला रहीं हैं|

आज के समय में उत्तर आधुनिकता ने अंतर्राष्ट्रीय विचार का स्थान ले लिया है तथा भूमंडलीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय बाजार का और दोनों हीं मनुष्यता के वर्तमान और भविष्य होने का दावा प्रस्तुत कर रहे हैं, जबकि हकीकत यह है कि ये कुछ चंद देशों के ही वर्तमान और भविष्य हैं| ये अपने भरी भरकम प्रचार- तंत्र, कंप्यूटर, इन्टरनेट आदि के द्वारा पूरी दुनिया को गिरफ्त में किये हुए हैं|इसे बिल गेट्स के इस कथन से भी समझा जा सकता है "इन्टरनेट एक प्रचंड लहर है, जो कंप्यूटर इंडस्ट्री को अपनी लपेट में ले रही है और बहुत से लोग इस लहर में तैरना सीखने में संकोच करेंगे,डूब जायेंगे|"२ (आलोचना पत्रिका, अक्टूबर-दिसम्बर २००५ अंक २३ पेज ३४)| अपने प्रचार की बहुलता से ये ग्राहक की बुद्धि को इस ढंग से सम्मोहित करते हैं कि उसकी दृष्टि उत्पाद की गुणवत्ता, जांच-परख, आवश्यकता, परिवेश, प्राथमिकता आदि से विस्थापित होकर उसकी गुलाम हो जाती है| विज्ञापन के इस युग में जिस प्रकार प्रचार की बहुलता उत्पाद की गुणवत्ता से ग्राहक का ध्यान विस्थापित कर देती है ठीक उसी प्रकार आज के इस युग में शब्द प्रायः अर्थों को विस्थापित करने का काम कर रहे हैं| भूमंडलीकरण भी एक ऐसा ही शब्द है| सामान्यतः इस शब्द से 'सब जन हिताय और सब जन सुखाय'का भ्रम पैदा होता है, जिसमें संसार के सभी लोग एक दूसरे के हित और सुख के लिए जुड़ जायेंगे| लेकिन इसका निहितार्थ ठीक इसके विपरीत है, क्योकि इसमें लोग एक दूसरे के हित के लिए नहीं बल्कि व्यपार के लिए जुड़े हुए हैं| यहाँ सब जन का हित नहीं वरन उन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का हित निहित है, जो कुछ शक्तिशाली और संपन्न देशों के लिए काम कर रहीं हैं| इसमें मानवीय हित गौड़ है तथा व्यापारिक हित प्रधान है| बहुत पहले १८४८ में कम्युनिस्ट घोषणापत्र में पूंजीवाद की मृत्यु की कामना करते हुए उसके गुणों का बखान 'कार्ल मार्क्स' ने इस प्रकार किया था—"अपने उत्पादों के बाजार की तलाश बुर्जुआ को पूरे भूमंडल में दौडाती है| इसे अपना नीड़ सर्वत्र बनाना है,इसे हर जगह बसना है, इसे अपना सम्बन्ध सर्वत्र फैलाना है|"३ (द्रष्टव्य:भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ, भूमिका, सच्चिदान्द सिन्हा) आज डेढ़ सौ साल बीत जाने के बाद भी पूंजीवाद का यह चरित्र यथावत कायम है|

आधुनिकता में जहाँ तार्किकता, बौद्धिकता, वैज्ञानिकता, औद्योगिकता, यथार्थवादिता तथा लौकिकता का आग्रह था, वहीँ उत्तर आधुनिकता में देशीयता, शून्यवाद, विखंडन, विस्थापन, मिथक, तंत्र-मन्त्र-टोटके, जड़ों की ओर वापसी, बहुलतावाद, सूचना-तकनिकी, जन- माध्यम, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक भौतिकवाद आदि का नारा दिया जा रहा है| एक सवाल यहाँ पर विचारणीय है, जो कि बराबर चर्चा का विषय बनता रहा है कि क्या उत्तर आधुनिकता आधुनिकता का अगला चरण है? अथवा उसका विरोध? अथवा उसके पुनर्लेखन का एक प्रयास है? हालाँकि यह भी सत्य है कि उत्तर आधुनिकता की सैद्धांतिकी बड़ी वृहद् और जटिल है| इसलिए ये प्रश्न भी कम जटिल नहीं हैं| सामान्यतः जब किसी भी शब्द के साथ 'उत्तर' शब्द जुड़ जाता है तो उससे दो अर्थ व्यंजित होते हैं-पहला यह कि अब पूर्व स्थिति नहीं रह गयी और एक नई स्थिति उभरकर सामने आ गयी है दूसरा यह कि नई स्थिति पूर्व स्थिति का विस्तार या अगला चरण है| उत्तर आधुनिकता से सम्बंधित समर्थक और चिन्तक दोनों ही प्रकार के हैं| उत्तर आधुनिकता के विचारकों के चिंतन को पढने के बाद ऐसा लगता है कि उत्तर आधुनिकता आधुनिकता के विरोध में ठीक उसी प्रकार आती है, जिस प्रकार आधुनिकता मध्यकालीनता के विरोध में जन्म लेती है| जबकि वास्तविक स्थिति यह नहीं है| "उत्तर आधुनिकता आधुनिकता का ही एक प्रकार से अगला चरण भी है, विरोध भी है और उसे पुनः लिखने का एक प्रयास भी है| उत्तर आधुनिकता आधुनिकता द्वारा छोड़े गए उन पक्षों को स्वीकार करती है,जिन्हें आधुनिकता प्रस्तुति योग्य नहीं मानती थी|"४ (द्रष्टव्य:उत्तर आधुनिकता :स्वरूप और आयाम, पृष्ठ २३, बैजनाथ सिंघल)|

उत्तर आधुनिकतावाद के सबसे प्रमुख विचारक ल्योतार्द्र हैं, जो उत्तर आधुनिकता को एक स्थिति के रूप में स्वीकार करते हैं| वे उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता से ही जोड़कर देखते हैं और उसी का विस्तार मानते हैं| डॉ.सुधीश पचौरी ने उनका मूल्याङ्कन करते हुए लिखा है कि "ल्योतार कहीं भी उत्तर आधुनिक को आधुनिक से पृथक नहीं मानते हैं,उत्तर आधुनिकता आधुनिकता का आखिरी बिंदु नहीं है बल्कि उसमे मौजूद एक नया बिंदु है और यह दशा लगातार है| उत्तर आधुनिकता की यह सातत्यमूलक छवि महत्वपूर्ण है|"५ (द्रष्टव्य:उत्तर आधुनिकता क्या है डॉ.जगदीश्वर चतुर्वेदी)| अर्थात् उत्तर आधुनिकता की चेतना

आधुनिक ही है, क्योंकि इसका विकास एवं इसकी अस्मिता का आधार वही उद्योग हैं, जो आधुनिकता की देन हैं| उत्तर आधुनिकता के प्रथम परिकल्पनाकर्ता 'अर्नाल्ड टायनबी' का भी विचार है कि" आधुनिकता के बाद उत्तर आधुनिकता तब शुरू होती है जब लोग कई अर्थों में अपने जीवन, विचार एवं भावनाओं में तार्किकता एवं संगति को त्याग कर अतार्किकता एवं असंगतियों को अपना लेते हैं| इसकी चेतना विगत को एवं विगत के प्रतिमानों को भुला देने में दीख पड़ती है|"६ (द्रष्टव्य:उत्तर आधुनिकता डॉ. उत्तम पटेल)|

उत्तर आधुनिक दौर को उत्तर औद्योगिक दौर भी कहा जाता है| इसके एक प्रमुख विचारक 'डेनियल बेल' की मान्यता है कि ".....Post industrial society is not one which will displace completely the industrial society of previous decades,but it to represent changes which may be describe as significant enough to warrant the title of 'post- industrial."७ (Daniel Bell,in the coming of post-industrial society page 33)| आशय यह है कि उत्तर आधुनिकतावाद आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के बाद की एक स्थिति है, जिसमे अब यह माना जाने लगा है कि 'आधुनिकता या उसके वादी रूप ने जो कुछ परोसा था अब वह बासी हो गया है और उसको खाने से परहेज ही नहीं गुरेज किया जाने लगा है और यह नसीहत भी दी जाने लगी है कि वह किसी भी तरह स्वादिष्ट,पाचन-योग्य नहीं रह गया है|' (द्रष्टव्य: उत्तर आधुनिकता: स्वरूप और आयाम, पृष्ठ ०३ डॉ बैजनाथ सिंघल)| चूँकि उत्तर आधुनिकता ने समस्त विचार,संस्कृति तथा दर्शन को कटघरे में खड़ा कर दिया है| इसलिए उत्तर आधुनिक समाज स्वतः ही नए रूप में स्थपित होगा| डेनिअल बेल का विचार है कि "यदि विगत सैकड़ो वर्षों में उद्योग-स्वामी, व्यापारी- वर्ग तथा उद्योग विशेषज्ञ, उद्योग संस्कृति के केंद्र में रहें हैं तो उसके स्थान पर अब वैज्ञानिक, गणितज्ञ, अर्थशास्त्री तथा नयी बौद्धिक टेक्नोलॉजी से जुड़े अभियन्ता होंगे|"८ (द कमिंग ऑफ़ पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसाइटी पेज ३४ डेनियल बेल) यही नहीं, वे आगे कहते हैं कि "यह नया समाज वस्तु उत्पादक समाज न होकर सेवा समाज होगा|"९ (उपर्युक्त पेज ३७) कुल मिलाकर "उत्तर आधुनिक औद्योगिक समाज, विज्ञान, तकनिकी और अर्थशास्त्र के पिछले कुछ वर्षों में एक साथ जुड़ जाने से ही बनता है|"१० (उपर्युक्त पेज २५)|

उत्तर आधुनिकतावाद में जो नारा दिया गया है उसमे एक नारा विखंडन अथवा विस्थापन का है| भाषिकी विखंडन का देरिदा का यह सिद्धांत समस्त विखंडनों का प्रतीक है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने 'छंद की मुक्ति को मानव मुक्ति का पर्याय' कहा था| रचना या पाठ के स्तर पर "विरचनावाद (Deconstruction) से अभिप्राय पाठ (text) के अध्ययन की वह पद्धति है, जिसके माध्यम से न केवल पाठ के निर्धारित अर्थ को विस्थापित किया जा सकता है, अपितु उसके अर्थगत अद्वितीयत्व को विखंडित भी किया जा सकता है|"११ (द्रष्टव्य: संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र पेज १५९ गोपीचंद नारंग)| जाक देरिदा की भी मान्यता यही है—"Deconstruction is a coming to terms with literature…. Deconstruction is emphatically not dissolution but analysis."१२ (उपर्युक्त पेज १५९)| संरचनावाद संकेतक और संकेत अर्थात शब्द और अर्थ की एकता (शब्दार्तौ सहितौ काव्यं –आचार्य भामह) पर बल देता है| संरचनावाद उत्तर आधुनिकता की भूमिका के रूप में है, जिसमें लांका, रोला बार्थ और फूको ही नहीं बल्कि जाक देरिदा भी शामिल हैं| यह एक समुच्चय का सिद्धांत है, किन्तु उत्तर आधुनिकतावाद ने संरचनावादी समुच्चय को स्वीकार न करके उत्तर संरचनावादी विखंडन को स्वीकार किया, जो ऐकिक विकास के विरुद्ध है| इससे स्पष्ट है कि उत्तर आधुनिकतावाद की दिलचस्पी सरंचनात्मक ऐकिकता में नहीं है वरन उत्तर संरचनात्मक विखंडनात्मकता में है, जो भूमंडलीकरण का भी एक निहित प्रयोजन है|

उत्तर आधुनिकतावाद ने साहित्य या किसी भी अनुशासन की मौलिकता पर प्रहार करते हुए 'पाठ' का अनुसन्धान किया है| वे किसी के द्वारा की गयी पाठ की व्याख्या को एक स्वतन्त्र पाठ के रूप में स्वीकार करते हुए 'पाठ की अनेकांतता' का समर्थन करते हैं| इसके पक्ष में उनका तर्क है कि इस प्रकार वे बद्धतामूल संघिताओं का विरोध करके 'साम्राज्यवादी एकाधिकारवाद' को चुनौती दे रहें हैं| रचना को पाठ मानकर उसके व्याख्या की परम्परा नयी नहीं है| संसार भर में कृतियों के अलग-अलग सन्दर्भों में बहुत सारे विवेचन और विश्लेषण मौजूद हैं| 'राजशेखर' ने काव्य मीमांसा में 'अनेकार्थ सार्थः' की बात कहकर अर्थ की अनेकता और निस्सीमता की ओर ही संकेत किया था, किन्तु रचना निरपेक्ष विवेचन विश्लेषण की जो पद्धति उत्तर आधुनिक दौर में विकसित हुई है वह पहले नहीं थी| डॉ. नंदकिशोर नवल की एक टिप्पणी है कि "...विखंडनवाद नकारवाद और अराजकतावाद का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमे अर्थ का रचना से सम्बंध बिल्कुल विछिन्न कर दिया गया है और उसके विभिन्न अर्थ एक दूसरे के विरोधी भी हो सकते हैं| विखंडनवाद के सिद्धान्तकारों ने तो यहाँ तक कहा है कि रचना एक कच्चा माल है, जिससे हम अपने मन के मुताबिक जो अर्थ चाहे ले सकते हैं|"१३ (आलोचना पत्रिका, अंक ३४ , जुलाई सितम्बर २००९ पेज १०५)| 'रिचर्ड रोर्ती' के शब्दों में "उत्तर आधुनिकता 'विडंबनात्मक सैद्धांतिकी' है,जो हर शाश्वत सत्य और अनिवार्यताओं की खोज के विरुद्ध है| जो किसी भी एक व्याख्या या निष्कर्ष की योजना को चुनौती है|"१४ (उत्तर आधुनिकता क्या है डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी) इसका आशय यह है की इसमें अराजकता की दिशा में चले जाने का खतरा भी है| उत्तर आधुनिकता ने पाठक और आलोचक के भेद को भी समाप्त कर दिया है| इसमें सभी पाठक आलोचक हो गए हैं| जब सभी पाठक आलोचक हो जायेंगे तो फिर आलोचक की उस साधना और विशेषज्ञता का क्या होगा, जो उसने रचना के अध्ययन,मनन और चिंतन से अर्जित किया है| आखिर आलोचक के इस प्रकार से अंत का आशय क्या है? यह तो "ठीक वैसे ही है जैसे भूमंडलीकरण, विशेषज्ञता को मशीनों में डालकर कर्ता को अनावश्यक बनाने की कोशिश में लगा है, ताकि स्वामित्व की अधिनायकी बिचौलिए और एजेंटों को सञ्चालन सौंप सके |"१५ (साहित्य की इतिहास दृष्टि पेज ८५, प्रभाकर श्रोत्रिय) सम्पूर्ण अनुशासन और मानकों के समाप्त हो जाने पर मनुष्य के अन्तः सम्बन्ध और पारस्परिक सौहार्द विखंडित हो जाते हैं यानि मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाले सूत्र टूट जाते हैं| इस भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था में मनुष्य को परस्पर जोड़ने वाले सौहार्द्र क्रमशः समाप्त होते चले जा रहे हैं| दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों में गृहयुद्ध और विघटन की स्थिति बनी हुई है, जिसमे विभिन्न जाति, मूल, धर्म और क्षेत्रों के लोग परस्पर अंतहीन हिंसा में उलझते जा रहें हैं| यह एक वैश्विक समस्या है, जो वर्तमान विकास पद्धति और वैश्वीकरण का सीधा परिणाम भी है|

यहाँ यह विचारणीय प्रश्न है कि आखिर उत्तर आधुनिकता में समस्त स्थापित प्रतिमानों को खंडित करने के पीछे मकसद क्या है? इस पर बहुत ही गंभीरता से सोचना और विचार करना होगा| यह तो पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि उत्तर आधुनिकता में विज्ञापन या प्रचार- तंत्र को बहुत महत्त्व दिया जाता है| विज्ञापन इनके लिए जनता की बुद्धि को सम्मोहित करने का एक सशक्त माध्यम भी है| जब किसी भी रचना या उत्पाद को प्रचार- तंत्र के द्वारा सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दिया जाता है तो इसके पीछे कोशिश यह होती है कि उसे सौंदर्यशास्त्र या सृजनात्मक श्रेष्ठता

के तर्कों द्वारा चुनौती न दी जा सके| इसका परिणाम यह होगा कि जो अल्प विकसित, अर्ध विकसित अथवा अविकसित देश हैं उनका साहित्य, उनकी भाषा तथा उनका अर्थ- तंत्र स्वतः ही समाप्त हो जायेगा, क्योंकि प्रचार के द्वारा सृजनात्मक श्रेष्ठता उन्हें नहीं प्राप्त हो सकेगी|इन विज्ञापनों को देखकर एक बार ऐसा प्रतीत होता है कि दुनिया में सामान्य स्त्री- पुरुष, गरीब, अपाहिज तथा हाशिये पर पड़े लोग समाप्त हो गए हैं अथवा उनकी अपनी कोई समस्या ही नहीं है| विज्ञापन की दुनिया उपभोक्ता संस्कृति और बाजार की दुनिया है, जो हमारे सोच और हमारे बोध को बदलने का काम कर रही है| हमारे समस्त ज्ञानात्मक और सांस्कृतिक प्रतीक बाजारवाद में बिकने को खड़े हैं| इस दृष्टि से "शक्ति और ज्ञान की अवस्था के बदल जाने का यह नया अर्थशास्त्र,नया समाजशास्त्र है|"१६ (उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य,पेज ५, कृष्णदत्त पालीवाल) इस पर पूरी गंभीरता के साथ विचार किया जाना चाहिए कि यह प्रचार- तंत्र 'वैज्ञानिक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम' मानवता के साथ कैसा व्यहार कर रहें हैं? टीवी पर जिन लोगों की दिनचर्या दिखलाई जाती है उसमे अपराध, हत्या, जासूसी, द्वंद्व, अंतर्द्वंद, स्मगलिंग, धर्म-कर्म, पूजा- पाठआदि अंततः किस प्रकार की जीवन- शैली की ओर संकेत कर रहें हैं? आज दुनिया के परस्पर विरोधी विचारों के देश भी इस बात पर एकमत कैसे हो गए है कि भूमंडलीकरण ही उन्नति का एक मात्र मार्ग है तथा बुद्धिजीवी भी इस बात पर लगभग सहमत दिखलाई पड़ रहें हैं कि उत्तर आधुनिकतावाद एक अपरिहार्य आधुनिकतम विचार है| यहाँ यह ध्यातव्य है कि आखिर यह कैसा खुला बाजार और बहुलतावादी विचार है, जो किसी वैकल्पिक मार्ग को न रखकर एकमात्र स्वामियों के हित की बंद गली में समाप्त हो जाता है|

उत्तर आधुनिकतावाद में तंत्र-मन्त्र, मिथक, फैंटेसी, शून्यवाद, देशीयता तथा जड़ों की ओर वापसी पर भी बहुत बल दिया जाता है| यह भी अपने आप में कम विष्मय जनक नहीं है कि आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के चरम विकास के दौर में तंत्र-मन्त्र, मिथक, फैंटेसी, शून्य पर बल देने का मतलब क्या है? विज्ञान की शक्ति का सामना क्या मिथक, फैंटेसी और तंत्र-मन्त्र आदि के बल पर किया जा सकता है? इसका सीधा सा उतर है नहीं किया जा सकता है| तब फिर मनुष्य की चेतना और कल्पना में ऐसी बातें क्यों भरी जा रहीं हैं? इसके पीछे एकमात्र कारण यह कि अब तक मनुष्य जिसकी कल्पना करता रहा है और जो दैवीय और आसुरी शक्तियां मिथक और जादू-टोनों तक ही सिमीत थी उसे हमने साकार कर दिखाया है| इसलिए हमारी शक्ति असीम और अपरिमित है| इसी प्रकार जड़ों की ओर वापसी और देशीवाद का नारा भी एक सुनियोजित प्रविधि है| इसका आशय यह है कि बहुजन अपनी जड़ों की ओर लौट जाए अर्थात अपनी आदिमता में बने रहें तथा अल्पसख्यंक फलें फूलें और आनंद भोगतें रहें| जैसे जो लोग आदिवासियों की संस्कृति और धर्म को बचाने और सहेजने का नारा दे रहें हैं इसके पीछे उनका मकसद एकमात्र यह है कि आदिवासियों के झोपड़े, लिपे हुए आँगन, अर्धनग्न वेशभूषा, दस- दस किलो के चूड़े-हसली, उनका भूखे पेट नाचना- गाना तो बना रहे किन्तु वे आराम से आधुनिकतम सुविधाओं का लाभ प्राप्त करते रहें| जबकि आदिवासियों की संस्कृति और धर्म को बचाने से ज्यादा आवश्यक है उनके जीवन को बचाना| इसके लिए उन्हें बराबरी का हिस्सा दिलाना होगा तथा अपने साथ बिठाना होगा| देशीयता और जड़ों की ओर वापसी की यह चिंता एक प्रकार से अंतराष्ट्रीय संकट एवं चिंता का विषय है|

ल्योतार्द ने उत्तर आधुनिकतावाद की एक पहचान 'विकेंद्रीकरण' के रूप में भी की है| विकेंद्रीकरण से अभिप्राय यह है कि अब तक जो केन्द्रीय स्थिति में रहें हैं जैसे धर्म के धरातल पर ईश्वर, समाज के धरातल पर पुरुष तथा सवर्ण, साहित्य के धरातल पर लेखक तथा आलोचक, राजनीति के धरातल पर एक केन्द्रीय दल तथा दुनिया के धरातल पर कुछ संपन्न तथा प्रभुत्वशाली देश इनको विकेन्द्रित कर जो अब तक उपेक्षित व तिरष्कृत रहें हैं, उन्हें स्थापित करना| यह एक पुनीत विचार है| जो अब तक उपेक्षित और तिरष्कृत रहें हैं उन्हें जरुर समानता का अधिकार मिलना चाहिए किन्तु इसका आशय यह नहीं कि अब तक उनके पक्ष में जो विचार किया गया उसे ख़ारिज कर दिया जाये| दलित- विमर्श और स्त्री विमर्श- आज के केन्द्रीय विमर्श बने हुए हैं| इसमें यह कहा जा रहा है कि अबतक का उपलब्ध सौंदर्यशास्त्र भद्रजनों का सौंदर्यशास्त्र है| इसलिए इसे बदलने की जरुरत है| यह विचार अच्छा है किन्तु इस पर इस दृष्टिकोण से भी विचार होना चाहिए कि यह कहीं विखंडन पर आधारित उत्तर आधुनिकतावाद के द्वारा समाज को अलग- थलग करने की कोई प्रविधि तो नहीं है, क्योंकि जिस समस्या पर पूरे समाज को एकमत होकर विचार करना चाहिए तथा समेकित संघर्ष करना चाहिए उस पर अगर समाज का एक वर्ग विशेष अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानकर दूसरे के संघर्ष को ख़ारिज कर रहा है तो यह कहीं न कहीं समाज को बांटने की एक कोशिश है| भारत जैसे देश में जहाँ दलित और नारी आन्दोलन एक सामजिक समग्रता में विकसित हुए हैं, यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण है| स्वाधीनता आन्दोलन को अगर हम एक उदहारण के रूप में लें तो स्त्रियों का घर से बाहर निकलकर आन्दोलन में कूद पड़ना, शिक्षा और उद्यम के क्षेत्र में सहभागी होना, अथवा अछूतों, किसानों और दलितों का आन्दोलन करना बिना पुरुष अथवा अन्य समूह के सहयोग के संभव नहीं था| सामाजिक रुढियों और वर्जनाओं को तोड़ने में भी इनका सहयोग और इनकी भागीदारी कम नहीं है| गाँधी, अम्बेडकर, ज्योतिबा फूले के साथ देश के केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं वरन साहित्यकार, कलाकार, रचनकार तथा बुद्धिजीवी सब संघर्ष कर रहे थे| यह संघर्ष आज भी जारी है| उत्तर आधुनिकतावादी आन्दोलन ने लिंग और जाति के आधार पर खंडित करके इस आन्दोलन को और कमजोर करने का काम किया है| डॉ. रामविलास शर्मा का विचार है कि –"यह यांत्रिक दृष्टिकोण है कि जो जिस जाति में पैदा हुआ वही उसका प्रतिनिधित्व कर सकता है दूसरा उसकी भावनाओं को समझ नहीं सकता, उसकी परिस्थितियों को समझ नहीं सकता|अगर ऐसी बात है तो मार्क्सवाद बेकार है और भक्ति साहित्य तो और भी बेकार है |"१७ (हिंदी आलोचना का विकास, मधुरेश पेज २८८) आज के समय में स्त्रियों और दलितों को जगाना जितना जरुरी है उससे ज्यादा जरुरी है पूरे समाज का उनके लिए संघर्ष करना|

सब मिलाकर उत्तर आधुनिकतावाद और भूमंडलीकरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं| उत्तर आधुनिकतावाद ने जिस सोच और विचार को रचना के स्तर पर जन्म दिया है भूमंडलीकरण ने बाजार और व्यवसाय के धरातल पर उसका विस्तार किया है|

सन्दर्भ ग्रन्थ एवं पत्रिकाएं

1. साहित्य की इतिहास दृष्टि- प्रभाकर श्रोत्रिय
2. संरचनावाद,उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र-गोपीचंद नारंग
3. उत्तर आधुनिकता स्वरूप और आयाम-डॉ. बैजनाथ सिंघल
4. भूमंडलीकरण की चुनौतियां-सच्चिदान्द सिन्हा
5. देरिदा:विखंडन की सिद्धान्तिकी-सुधीश पचौरी
6. हिंदी आलोचना का विकास-मधुरेश
7. उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य-कृष्णदत्त पालीवाल
8. इन दि कमिंग ऑफ़ पोस्ट इंडस्ट्रियल सोसाइटी-डेनियल बेल

पत्रिकाएं तथा लेख

1. आलोचना अंक ३४,२७,४७ ४९,४८,
2. वसुधा ८२
3. वाक् अंक ७
4. कृति संस्कृति संधान अंक ४ (सयुक्तांक)
5. उत्तर आधुनिकता क्या है? जगदीश्वर चतुर्वेदी
6. उत्तर आधुनिकता:डॉ.उत्तम पटेल